अध्याय
13

ग्राम श्री

not to be republished © JCERT

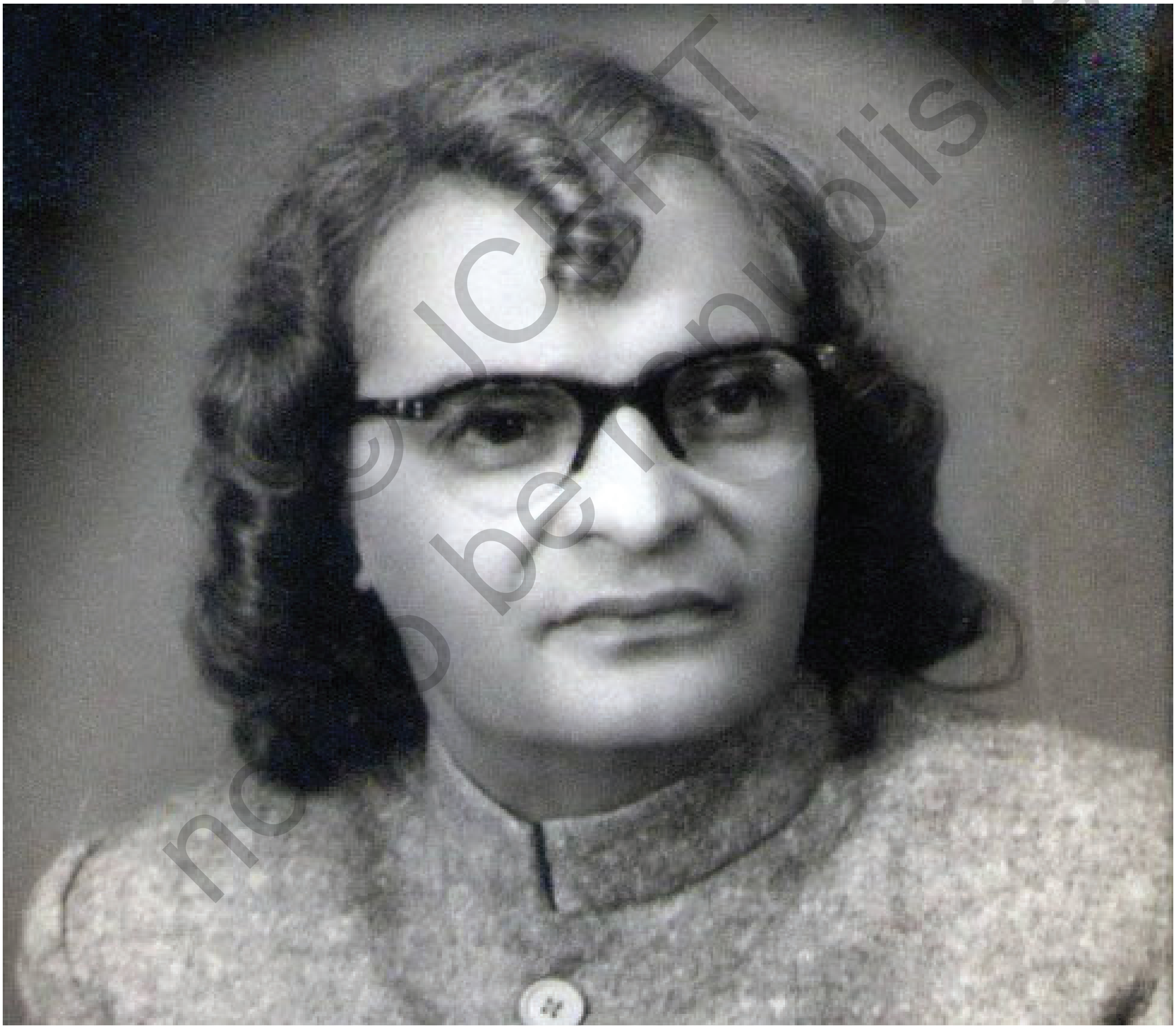

सुमित्रानंदन पंत

1. कवि-परिचय

सुमित्रानंदन पंत

*** जन्म-स्थान : अल्मोड़ा उत्तर प्रदेश कैसोनी गांव में हुआ।**

*** जन्म- 20 मई 1900 को हुआ ।**

*** मृत्यु- 28 दिसंबर 1977 प्रयाग उत्तर प्रदेश में।**

*** वास्तविक नाम- गुसाई दत्त रखा गया था।**

*** माता - माता सरस्वती देवी**

*** पिता - गंगा दत्त पंत**

2. साहित्यिक परिचय

*सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख स्तंभ कवि माने जाते हैं।

*प्रकृति से हसीन लगाव था बचपन से ही सुंदर रचनाएं लिखा करते थे।

*उनकी कविताएं प्रकृति प्रेम- प्रसंग, मनुष्य आदि से जुड़ी है।

*पंत ने अपनी लगभग सारी रचनाएं हिंदी भाषा में लिखी।

*छायावादी कविताओं के अलावा पंत ने सामाजिकता, मानवतावादी, प्रगति पर आधारित कविताएं की भी रचना की

*प्रमुख कृतियां: वीणा, उच्छावास, पल्लव ग्रंथि, गुंजन, लोकायतन युगांत, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूली, ग्राम्या, कला और बूढ़ा चांद, चिदंबरा आदि।

*पुरस्कार /सम्मान: 'चिदंबरा' के लिए 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार,

'लोकायतन' के लिए सोवियत नेहरू शांति पुरस्कार और हिंदी साहित्य की अनवरत सेवा के लिए उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया।

3. पाठ परिचय

'ग्राम श्री 'कविता में पंत ने गांव की प्राकृतिक सुषमा और समृद्धि का मनोहारी वर्णन किया है। खेतों में दूर तक फैली लहलहाती फसलें, फल, फूलों से लदी पेड़ों की डालियां और गंगा की सुंदर रेती कवि को रोमांचित करती है। उसी रोमांच की अभिव्यक्ति इस कविता में किया गया है। इस कविता में कवि ने प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। प्रकृति का वास्तविक सौंदर्य हमें गांव में ही देखने को मिलता है।

गांव में फसलों की मखमली कोमल हरियाली खेतों में दूर-दूर तक फैली हुई है सूरज की किरणें उससे ऐसे लिपट गई है जैसे उस हरियाली पर चांदी की उजली जाली लपेट दी गई हो।

© JCERT not to be republished

ग्राम श्री

काव्यांश 1

फैली खेतों में दूर तलक
मखमल की कोमल हरियाली,
लिपटीं जिससे रवि की किरणें
चांदी की सी उजली जाली!
तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक,
श्यामल भू तल पर झुका हुआ
नव का चीर निर्मल नील फलक!

शब्दार्थ- तलक = तक, मखमल = मखमल की जैसी कोमल हरी-भरी, रवि = सूर्य, तन = शरीर, हरित = हरा, रुधिर = खून, श्यामल = हरा, भू-तल = पृथ्वी, नभ = अकाश, चीर निर्मल = बहुत स्वच्छ, नील फलक = नीला विस्तार

© JCERT not to be republished

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 1 से 'ग्राम श्री' कविता से लिया गया है। इसके रचयिता छायावाद के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। इन पंक्तियों में गांव की फसल संस्कृति का सुंदर वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कवि कहते हैं गांव में चारों तरफ हरियाली फैली हुई है और जब सुबह सुबह इस पर ओस की बूंदे गिरती है और सूर्योदय के बाद जब सूर्य की किरणें इन बूंदों पर पड़ती है तो सारा वातावरण झिलमिल झिलमिल चमक उठता है मानो ऐसा प्रतीत होता है कि खेत की हरियाली के ऊपर चांदी की एक चादर बिछी हुई है कवि तिनकों को हरे तन वाला बताता है नए उगे हुए हरे पत्तों पर सूर्य की किरणें पड़ती है तो ऐसा लगता है मानो सूर्य की किरणें उनके आर पार चली जा रही है और उनके अंदर स्थिर हरे रंग का खून स्पष्ट दिखाई दे रहा है जब हम दूर से इस वातावरण को निहारते हैं तो ऐसा लगता है मानो नीले रंग का आकाश झुक कर खेतों की हरियाली के ऊपर अपना आंचल बिछा रहा है।

विशेष–

* प्रकृति का मनोरम स्वरूप का चित्रण किया गया है।
*'हिल हरित' में 'अनुप्रास', 'हरित रुधिर' में विरोधाभास, मानवीकरण आदि अलंकार का प्रयोग किया गया है।
*भाषा सरल सहज खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश 2

रोमांचित सी लगती वसुधा
आई जौ गेहूं में बाली,
अरहर सुनई की सोने की
किंणकिणियां है शोभा वाली!
उड़ती भीनी तैलाक्त गंध
फूली सरसों पीली पीली
लो, हरित धरा से झांक रही
नीलम की कलि, ती सी नीली!

शब्दार्थ– रोमांचित = प्रसन्न, वसुधा = धरती, बाली = दानों का गुच्छा, अरहर = अरहर का पौधा, शोभा वाली = शोभा से युक्त, भीनी = मीठी-मीठी ,तैलाक्त = खुशबूदार तेल से युक्त, हरित धरा = हरी भरी धरती, तीसी =एक पौधा जिस पर नीले रंग का फूल खिलता है और उसका तेल निकाला जाता है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 1 में संकलित 'ग्राम श्री' शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचयिता छायावाद के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत हैं।

व्याख्या– कवि ने फसलों से लदी हुई धरती की सुंदरता का वर्णन बड़े ही रोमांचक ढंग से किया है। खेतों में जौ और गेहूं की फसल उगने से धरती बहुत ही रोमांचित लग रही है। अरहर और सनई की फसलें सोने की करधनी जैसी लग रही है, जो धरती रूपी युवती की कमर में बंधी हुई है और हवा चलने से हिल हिल कर मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रही है। सरसों के फूलों के खिल जाने से पूरे वातावरण में एक खुशबू बह रही है, जो धरती की प्रसन्नता को दर्शा रही है। इस हरी भरी धरती की सुंदरता को बढ़ाने के लिए अब तीसी के नीले फूल अपना सर उठाकर झांक रहे हैं। इन सब का एकत्रित सौंदर्य देखकर मानो धरती रोमांचित हो गई है। पुलक और प्रशंसा से भर -सी गई है।

विशेष–
*प्रकृति का मनोरम स्वरूप का वर्णन किया गया है।
*यहां खेतों में लहराती फसलें हैं जिन पर रंग बिरंगे फूल खिले हैं।
*मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास, अलंकार का प्रयोग है।
*साधारण बोलचाल भाषा खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश 3

रंग रंग के फूलों में रिल मिल
हंस रही सखियां मटर खड़ी,
मखमली पेटियों सी लटकी
छमियां छिपाए बीज लड़ी
फिरती हैं रंग रंग की तितली
रंग रंग के फूलों पर सुंदर
फूले फिरते हों फूल स्वयं
उड़ उड़ वृंतों पर!

शब्दार्थ– रंग रंग के = विभिन्न रंगों, रिल मिल = मिली जुली, वृंत = डंठल

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 1 में संकलित 'ग्राम श्री' शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत है। कवि ने खेत में रंग बिरंगे फूलों और तितलियों की सुंदरता का वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि विभिन्न रंगों के फूलों के बीच खड़ी मटर की फसल हंस रही है, जैसे कोई सखी जब सज-धज कर तैयार होती है तो सारी सखियां उसे देख कर मुस्कुराने लगती है। इन्हीं के बीच फसलों के बीज से लदे लड़ियां खड़ी हुई है। इन सब के बीच, कई तरह की रंग-बिरंगी तितलियां एक फूल से दूसरे फूल तक उड़-उड़ कर जा रही है। यह दृश्य ऐसा लग रहा है, मानो खुद फूल ही फूल उड़कर दूसरे फूलों तक जा रहे हैं। कवि की कल्पना सजग हो उठी है, जिसमें उन्होंने रंगों से भरे प्राकृतिक वातावरण का बड़ा ही मनभावन चित्रण किया है।

विशेष–

*कवि ने रंग -बिरंगे फूलों और तितलियों की सुंदरता का चित्रण किया है।
*अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार का प्रयोग है।
*भाषा सरल सहज हिंदी खड़ी बोली का प्रयोग है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश 4

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से
लग गई आम्र तारु की डाली,
झड़ रहे ढाक, पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली!
महके कटहल, मुकुलित जामुन
जंगल में झरबेरी झूली
फूले आडू नींबू दाडिम,
आलू, गोभी ,बैंगन ,मूली !

शब्दार्थ- रजत = चांदी, स्वर्ण = सोना, मंजरी = आम का बौर, तरु = पेड़, झरना = गिरना, कोकिला = कोयल, मतवाली = मदहोश, मुकुलित = अधखिला, दाड़िम = अनार।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 1 में संकलित 'ग्राम श्री' शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचिता छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत है। इन पंक्तियों में वसंत ऋतु का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है।

व्याख्या- कवि कहता है कि आम के पेड़ों की डालियां सुनहरी और चांदनी रंग की आम की बौर से लग चुकी है। पतझड़ के कारण ढाक और पीपल के पेड़ की पत्तियां झड़ रही है। इन सब से कोयल मतवाली होकर मधुर संगीत सुना रही है। पूरे वातावरण में कटहल की महक को महसूस किया जा सकता है और आधे पक्के-आधे कच्चे जामुन तो देखते ही बनते हैं। झरबेरी बेरों से लग चुकी है। खेतों में कई तरह के फल एवं सब्जियां लग चुकी है, जैसे आड़ू, नींबू, अनार, आलू, गोभी, बैंगन, मूली इत्यादि।

विशेष-

*इन पंक्तियों में वसंत ऋतु का सुंदर चित्रण किया गया है।

*कवि ने फलों और सब्जियों का मनमोहक चित्र खींचा है।

*भाषा सरल सहज बोलचाल खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश- 5

पीले मीठे अमरुद में
अब लाल लाल चितियां पड़ी
पक गएस सुनहले मधुर बेर,
आंवली से तरु की डाल जड़ी!
लहलह पालक, महमह धनिया,
लौकी औ' सेम फलीं, फैलीं
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिरचो की बड़ी हरी थैली!

शब्दार्थ- सुनहले = सोने के रंग, मधुर = मीठे, अंवली = आंवला, जड़ी = लदी, महमहम = महकता हुआ

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 1 में संकलित 'ग्राम श्री' शीर्षक कविता से ली गई है जिसके रचयिता सुमित्रानंदन पंत है। बसंत ऋतु का सुंदर वर्णन किया गया है।

व्याख्या- कवि कहते हैं वसंत ऋतु होने के कारण अमरूद के पेड़ो पर फल पक चुके हैं और उन पर लाल लाल निशान भी दिखाई दे रहे हैं। इस बात का संकेत है कि अमरुद मीठे हो चुके हैं। बैर भी पक कर सुनहरे रंग के हो गए हैं। आंवले के फल से पूरी ऐसी लदी हुई है, जैसे किसी गहने में मोती जड़े हों। पालक पूरे खेत में लहलहा रहा है और धनिये की सुगंध तो पूरे वातावरण में फैल गई। लौकी और सेम की लताएं पूरे खेतों में फैल गई है। टमाटर लाल हो चुके हैं, मानो जैसे जमीन पर मखमल बिछा हुआ हो। पेड़ों पर लगी हरी मिर्चे के गुच्छे किसी बड़ी हरी थैली की तरह लग रहे हैं।

विशेष-

*वसंत ऋतु में प्रकृति के सौंदर्य के साथ गांव के खेतों के सुंदरता का वर्णन किया गया है।

*अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है

भाषा सरल सहज खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया गया है

© JCERT not to be republished

काव्यांश 6

बालू के सांपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती
सुंदर लगती सरपच छाई
तट पर तरबूज की खेती
अंगुली की कंघी से बगुले
कलंगी संवारते हैं कोई,
तिरते जल में सुरखाब, पुलिस पर
मगरौठी रहती सोई!

शब्दार्थ– बालू = रेत, सतरंगी = सात रंगों वाली, सरपत = सूखी घास, पुलिन = किनारा, मगरौठी = नदी के किनारे रहने वाला पक्षी, सुरखाब = चक्रवाक पक्षी

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियां हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग 1 में संकलित 'ग्राम श्री' शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत है। इन पंक्तियों में गंगा-तट के सौंदर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कवि गंगा तट के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गंगा के किनारे रेत टेढ़ी-मेड़ी कुछ इस तरह हुई फैली हुई है, जैसे कोई सांप बालू पर निशान छोड़ गया हो। उस रेत पर पड़ती सूर्य की किरणें रंग बिरंगी नजर आ रही है। गंगा के तट पर बिछी घास और तरबूजो की खेती बहुत ही सुंदर दिखाई पड़ रहे हैं। गंगा के तट पर शिकार करते बगुले अपने पंजों से कलंगी को ऐसे सवार रहे हैं, मानो वे कंघी कर रहे हो। सुरखाबपक्षी जल में तैर रहे हैं और मगरौठी पक्षी आराम से सोए हुए हैं।

विशेष–

*कवि गंगा तट के सौंदर्य का चित्रण किया है।

*गंगा के तट पर बीछी घास और तरबूजों की खेती का सुंदर चित्रण किया गया है।

*भाषा का प्रयोग खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश 7

हंसमुख हरियाली हिम-आतप
सुख से अलसाए-से सोते,
भीगी अंधियाली में निशि की
तारक स्वप्नों में-से खोये
मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम
जिस पर नीलम नभ आच्छादन-
निरुपम हिमांत में स्निग्ध शांत
निज शोभा से हरता जन मन!

शब्दार्थ- हिम-आतप = सर्दी की धूप, अलसाए = आलस्य से भरे हुए, निशि = रात, तारक = तारे, मरकत = पन्ना नाम का रत्न, नीलम = नीलम नीले रंग का कीमती पत्थर हरता = चुरा लेता, जन = मनुष्य।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक क्षितिज भाग 1 से 'ग्राम श्री' शीर्षक कविता से ली गई है। इसके रचयिता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत है। इन पंक्तियों में कवि ने गांव की हरियाली, शांति एवं प्राकृतिक सौंदर्य का बड़ा ही सरल वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि अपने गांव के हरे भरे सौंदर्य को देख रहे हैं। कवि कहते हैं सर्दी की धूप में जब सूर्य की किरणें खेतों की हरियाली पर पड़ती है, तो इस तरह चमक उठती है, मानो खुशी से झूम रही हो। कवि को दोनों आलस्य से भरी हुई प्रतीत होते हैं तो, कभी सोई दिख रही है। सर्दी की रातें ओस के कारण भिगी हुई जान पड़ रही है, जिनमें तारे मानो किसी सपने में खोए हुए लग रहे हैं ।इस वातावरण में पूरा गांव रत्न की तरह लग रहा है, जिसे आकाश के नीले रंग की चादर ओढ़ा रखी हो। इस प्रकार शरद ऋतु के अंतिम दिनों में गांव के वातावरण में अनुपम शांति की अनुभूति हो रही है, हरियाली व गांव की शांति सभी लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करती है।

विशेष-
*कवि ने अपने गांव के हरे भरे सौंदर्य का वर्णन किया है।
*'मरकत डिब्बे सा' में उपमा हंसमुख हरियाली हिम में अनुप्रास अलंकार है।
*कविता के अंतिम पंक्तियों में शरद ऋतु का वर्णन है।
*भाषा सरल सहज खड़ी बोली हिंदी है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न – अभ्यास

1. कवि ने गांव को हरता जन मन क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने गांव को हरता जन-मन इसलिए कहा है क्योंकि गांव के चारों तरफ फैली हरियाली, रंग-बिरंगे खिले फूल, आम और लीची में आयी बौंर, खेतों में उगी रंग-बिरंगी सब्जियां व फल फूल, सभी प्रकृति की शोभा बढ़ा रहे हैं जिसके कारण धरती बहुत सुंदर दिखाई दे रही हैं। गांव का यह अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य सभी लोगों के मन को छू ले रहा है इसीलिए कवि ने गांव को "भरता जन-मन" कहां है।

2. कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है?

उत्तर- कवि ने कविता में "ऋतुओं के राजा बसंत ऋतु" का बहुत सुंदर वर्णन किया है।

3. गांव को 'मरकत डिब्बे सा खुला' क्यों कहा गया है?

उत्तर- मरकत पन्ना नामक रत्न को कहते हैं। जिसका रंग हरा होता है। मरकत के खुले डिब्बे से सब कुछ साफ-साफ दिखता है। मरकत के हरे रंग की तुलना गांव की हरियाली से की गई है। गांव का वातावरण भी मरकत के खुले डिब्बे के समान हरा भरा तथा खुला खुला सा लगता है। इसलिए गांव को मरकत डिब्बे सा खुला कहा गया है। गांव में हर जगह हरियाली ही हरियाली छाई हुई है जिसे देखकर कवि को ऐसा लग रहा है।

4. अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं?

उत्तर- अरहर और सनई के पौधों में खिले फूल व कलियों को देखकर कवि को ऐसा लग रहा है मानो प्रकृति ने सोने की किकिणियों (सोने की करधनी, कमर में बांध ने का आभूषण) बांध रखी हो जो हवा से मिलकर मधुर आवाज में बज रहे हैं।

5. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) बालू के सांपों से अंकित

गंगा की सतरंगी रेती

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि गंगा की रेत सूर्य की सप्तरंगी आभा से युक्त होकर लहरों के साथ लहराते हुए सांप जैसी प्रतीत हो रहे हैं। गंगा के किनारे पड़े निशान ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मोनो किसी रेत पर सांप का आकृति उकेर दी हो।

(ख) हंसमुख हरियाली हिम-आतप

सुख से अलसाए से सोए

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति का भाव है कि कवि अपने गांव के हरे भरे सौंदय को देख बहुत प्रसन्न चित्त होते हैं। इसलिए कवि कहते हैं कि प्रकृति अपनी नई प्राकृतिक छटा को पाकर बेहद खुश है और सर्दियों की इस धूप में वह सुख से कभी अलसाई हुई है तो, कभी सोई हुई सी दिख रही है।

© JCERT not to be republished

6. निम्न पंक्तियों में कौन -सा अलंकार है?

तिनकों के हरे हरे तन पर

हिल हरित रुधिर है रहा झलक

उत्तर-हरे-हरे, हिल-हरित में अनुप्रास अलंकार है।

हरित रुधिर में विरोधाभास अलंकार है।

तिनकों के तन पर-रूपक और मानवीकरण अलंकार है।

हरे-हरे में पुनरुक्ति अलंकार है

7. इस कविता में जिस गांव का चित्रण हुआ है वह भारत के किस भू-भाग पर स्थित है?

उत्तर- उतरी भारत के मैदानी इलाके का चित्रण हुआ है।

जिसमें उत्तराखंड राज्य का एक गांव है अर्थात कवि का गांव 'कौसानी' है, जो उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में स्थित है।

रचना और अभिव्यक्ति

8. भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- कविता भाव और भाषा दोनों की दृष्टि से अत्यंत सहज और आकर्षक है। इस कविता में ऋतुराज बसंत का खूबसूरत वर्णन किया है। बसंत के आगमन से प्रकृति में होने वाले बदलावों को बहुत ही सरल, सहज, व आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया गया है। कविता में अनुप्रास, रूपक, उपमा, मानवीकरण अलंकारो का सुंदर प्रयोग हुआ है। कविता की भाषा अत्यंत सरल, सहज तथा प्रवाहमयी है।

9. आप जहां रहते हैं उस इलाके के इसी मौसम विशेष के सौंदर्य को कविता या गद्य में वर्णित कीजिए।

उत्तर-

मैं दिल्ली का रहने वाला हूँ। हमारा गाँव उस क्षेत्र में है जो यमुना नदी से मात्र एक-डेढ़ किलोमीटर ही दूर है। इस क्षेत्र में सरदी और गरमी दोनों ही खूब पड़ती हैं। मुझे गरमी का मौसम पसंद है। गरमी में यमुना के दोनों किनारों पर सब्जियों की खेती की जाती है जिससे हरियाली बढ़ जाती है। इन खेतों में जाकर खीरा, ककड़ी, खरबूजा, तरबूज आदि तोड़कर खाने का अपना अलग ही आनंद होता है। दोस्तों के साथ यमुना के उथले पानी में नहाने, रेत पर उछलने-कूदने और लोटने का मज़ा अलग ही है। इस ऋतु में सुबह-शाम जल क्रीड़ा करते हुए पक्षियों को निहारना सुखद लगता है। आम, फालसा, लीची आदि फल इसी समय खाने को मिलते हैं। यहाँ की हरियाली आँखों को बहुत अच्छी लगती है।

© JCERT not to be republished